इन्क़िलाबी नज़र
आवाज़ ... आम आदमी की
लखनऊ, बृहस्पतिवार, 10 सितम्बर 2026

किसी को माफ़ करना कमज़ोरी नहीं बल्कि सामर्थ्यवान ही ऐसा कर सकता है।
-महात्मा गाँधी

वर्ष 19 अंक 9 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ-12

तापमान - अधिकतम 34.6°C (+1.0) न्यूनतम 26.6°C(+1.7) सेंसेक्स 74,764.23 (-813.35) निफ्टी 23,431.50 (-203.60) सोना 1,54,460 चांदी 2,50,000 मुद्रा - डालर 95.12 दिरहम 25.90 रियाल 25.36

फिजियोथेरेपी की भूमिका पर छात्रों ने जाना नया नजरिया

एरा यूनिवर्सिटी में मनाया गया फिजियोथेरेपी दिवस

लखनऊ (सं)। दिल की बीमारी या स्ट्रोक के बाद मरीज के लिए सामान्य जिंदगी में लौटना सिर्फ दवाओं से संभव नहीं होता। चलने-फिरने की क्षमता वापस पाना, शरीर को फिर से सक्रिय करना और आत्मनिर्भर बनना भी इलाज का अहम हिस्सा है। इसी संदेश को केंद्र में रखते हुए एरा यूनिवर्सिटी में विश्व फिजियोथेरेपी दिवस मनाया गया। फैकल्टी ऑफ एलाइड हेल्थ साइंसेज एंड रिसर्च के फिजियोथेरेपी विभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रम में छात्रों और विशेषज्ञों ने फिजिकल एक्टिविटी को स्वस्थ जीवन की आधारशिला बताया।

कार्यक्रम में इस वर्ष की थीम के तहत हृदय रोगों और स्ट्रोक की रोकथाम, उपचार और रिहैबिलिटेशन में फिजियोथेरेपी की भूमिका पर चर्चा हुई। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रो-वाइस चांसलर प्रो. फरजाना महदी ने किया। उन्होंने फिजियोथेरेपी को बीमारी की रोकथाम और मरीजों को दोबारा आत्मनिर्भर बनाने का प्रभावी माध्यम बताया। विशेषज्ञों ने बताया कि नियमित शारीरिक गतिविधि न केवल जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों के जोखिम को कम करने में मदद करती है, बल्कि बीमारी के बाद मरीज की कार्यक्षमता और जीवन की गुणवत्ता सुधारने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कार्यक्रम का शुभारंभ रंगोली प्रतियोगिता से हुआ, जिसमें छात्रों ने स्वास्थ्य और वेलनेस से जुड़े संदेशों को रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया। विभागाध्यक्ष प्रो. सुमित अस्थाना ने छात्रों को सबूत आधारित क्लिनिकल प्रैक्टिस और लगातार सीखने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में डॉ. आर.एस. त्रिपाठी और एराज लखनऊ मेडिकल कालेज एण्ड हॉस्पिटल के प्रिंसिपल प्रो. जमाल मसूद भी मौजूद रहे। ऑनलाइन सत्र में प्रो. अली ईरानी, प्रो. संजीव झा, डॉ. रुचि वार्ष्णेय, डॉ. एजाज अशई और डॉ. समाना सैयद ने विशेषज्ञ विचार साझा किए। कार्यक्रम के अंत में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। कार्यक्रम ने छात्रों को यह समझने का अवसर दिया कि फिजियोथेरेपी केवल व्यायाम कराने तक सीमित नहीं, बल्कि मरीज को दोबारा सामान्य और आत्मनिर्भर जीवन की ओर ले जाने वाली चिकित्सा प्रक्रिया का अहम हिस्सा है।